भारतीय राष्ट्रवाद

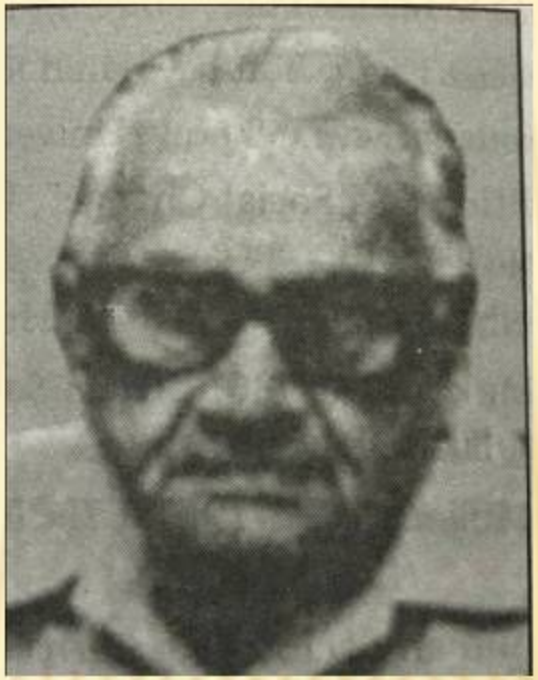

अक्षय रमनलाल देसाई

(1915—1994)

डॉ. सुमन तिवारी

आर्य महिला पी.जी. कालेज, वाराणसी

भारतीय राष्ट्रवाद

अक्षय रमनलाल देसाई

जीवन परिचय

जन्म : 16 अप्रैल 1915 ई0, नाडियाड, गुजरात

मृत्यु : 12 नवम्बर 1994, बड़ौदा

शिक्षा : स्नातक, स्नातकोत्तर तथा एल.एल.बी. – बम्बई विश्वविद्यालय

पी.एच.डी. : 1946 (जी.एस. घुर्ये के निर्देशन में)

विभागाध्यक्ष : समाजशास्त्र विभाग 1947 बम्बई विश्वविद्यालय

पद्धति (Process): ऐतिहासिक द्वन्द्वात्मक पद्धति **(मार्क्स एवं ऐंजिल्स विचारधारा)**

पद्धति

- ऐतिहासिक द्वन्द्वात्मक पद्धति के अनुयायी
- मार्स और एंजिल्स का गहन अध्ययन
- वेलियान ट्राटस्की से अधिक प्रभावित
- भारतीय समाज का अन्तर्विरोध एवं आंदोलनों का कारण
  - पूँजीवादी व्यवस्था

रचनाएं

- Social Background of Indian Nationalism - 1948
- Immanent Feature of Indian Nationalism - 1975
- The Issue and Problem of Rural Sociology in India - 1969
- Slums and Urbanization of India 1970, 1972
- Implications of the Modernization of Indian Society in the World Context - 1971
- State and Society in India - 1975
- Peasant Struggle in India - 1979
- Rural India in Transition - 1979
- Indian's Path of Development & 1984

ग्राम संरचना

- ब्रिटिश शासन के पहले भारत के ग्राम एक स्वायत इकाई हुआ करते थे।
- गावों में व्यक्ति, परिवार और जाति ग्राम पंचायत के अधीन थे तथा व्यवस्थायें सामन्तवादी थीं।
- ग्रामों की जनसंख्या कृषकों की थी।

Contd...

ग्राम संरचना

- किसान परिवार पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी भूमि पर खेती करते थे और यही ग्राम की संस्कृति थी।
- ग्रामीण कृषक हल, बैल जैसे पुरानी तकनीकी के आधार पर खेती करते थे।
- दस्तकार अपने पुराने तरह के औजारों से चीजों को बनाया करते थे।
- सामाजिक दृष्टि से उन दिनों परिवर्तन संख्यात्मक थी गुणात्मक नहीं।

भारतीय समाज का रूपान्तरण

- सामान्तवादी अर्थव्यस्था से पूँजीवादी आर्थिक व्यवस्था का रूपान्तरण भारत में ब्रिटिश शासन के कारण हुआ।
- ब्रिटिश प्रशासन ने व्यापार, उद्योग और वित्त के मामले में पूँजीवादी नीतियों को अपनाया एवं पुरानी आर्थिक व्यवस्थाओं को ध्वस्त किया। जिससे सामाजिक स्थितियां बदली एवं परिवर्तन हुआ।
- आधुनिक उद्योगों के सामने पुराने दस्तकार समाप्त हो गये तथा पूँजीपति, कृषिमजदूर, किरायेदार तथा व्यापारीवर्ग जैसे नये वर्ग उभरे।
- ब्रिटिश प्रभाव में भारतीय समाज की स्वायत्तता को बदल दिया जिससे भूमि लगान व्यवस्था, कृषि का व्यापारीकरण आदि बढ़ा।
- जिससे गरीबी व शोषण बढ़ा व जमींदारी प्रथा तथा कृषक मजदूर वर्ग पैदा हो गया।

Contd...

भारतीय समाज का रूपान्तरण

- नगरीय समाज में पूँजीपति, औद्योगिक मजदूर, छोटे व्यापारी तथा व्यावसायिक वर्ग जैसे डॉक्टर, वकील, आदि वर्ग उभरे।
- ब्रिटिश लोगो ने रेलवे लाइने डाली, डाक सेवा प्रारम्भ की, कई प्रभावी कानून बनाये और अंग्रेजी शिक्षा प्रारम्भ की जिससे भारतीय समाज में गुणात्मक परिवर्तन हुआ।

Contd....

भारतीय समाज का रूपान्तरण

- ब्रिटिश प्रयत्नों से एक नयी **शोषणवादी व्यवस्था प्रारम्भ** हुई परन्तु यह भी सत्य है कि इन प्रयत्नों से सारा भारत एक हो गया तथा विखरा हुआ भारत एक मुख्य धारा में परिवर्तित हो गया।
- इसके कारण सामाजिक आंदोलनों सामूहिक प्रतिनिधित्व, राष्ट्रीय भावनाओं के उदय और एक नई चेतना अर्थात नये **भारतीय राष्ट्रवाद** का उदय हुआ।

भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि

- देसाई की पहली पुस्तक (Social Background of Indian Nationalism) के अनुसार भारत का राष्ट्रवाद ब्रिटिश लोगों द्वारा नई भौतिक परिस्थितियों के निमार्ण के कारण हुआ।
- ब्रिटिश लोगों ने औद्यौगिकरण एवं आधुनिकीकरण के माध्यम से कई संरचनायें पैदा की तथा नये आर्थिक सम्बन्ध हुये।
- सम्बन्धों के परिवर्तन के कारण पारम्परिक आर्थिक संस्थाओं में परिवर्तन हुये।
- देसाई परम्परा के विश्लेषणों को महत्वपूर्ण नहीं मानते।
- भारत का द्वन्द्वात्मक इतिहास यह बताता है कि परम्परा की जड़े भारत की अर्थव्यवस्था तथा उत्पादन के सम्बन्धों के साथ जुड़ी हुई है।

Contd...

भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि

- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की अर्थव्यवस्था तथा समाज दोनो में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुये।
- जो भी राज्य बने वे पूँजीवादी राज्य के रूप में बने।
- इस काल में सम्पत्तिवान लोगों को सहयोग तथा समर्थन मिला एवं शोषित वर्ग का सबसे अधिक दमन हुआ।
- देसाई की रचनाओं में ग्राम समाजशास्त्र, नगरीयकरण श्रमिक आंदोलन, किसान आधुनिकीकरण धर्म तथा प्रजातांत्रिक अधिकारों पर पुस्तकें शामिल थी।
- देसाई ने भारतीय राष्ट्रवाद को निम्नलिखित पांच चरणों में परिभाषित किया

देसाई ने भारतीय राष्ट्रवाद को निम्नलिखित पांच चरणों में परिभाषित किया –

प्रथम चरण (1885)

- राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक जागरूकता में वृद्धि
- राजाराम मोहनराय जैसे समाज सुधारकों ने प्रशासनिक कार्यों में आमलोगों की भागीदारी का समर्थन

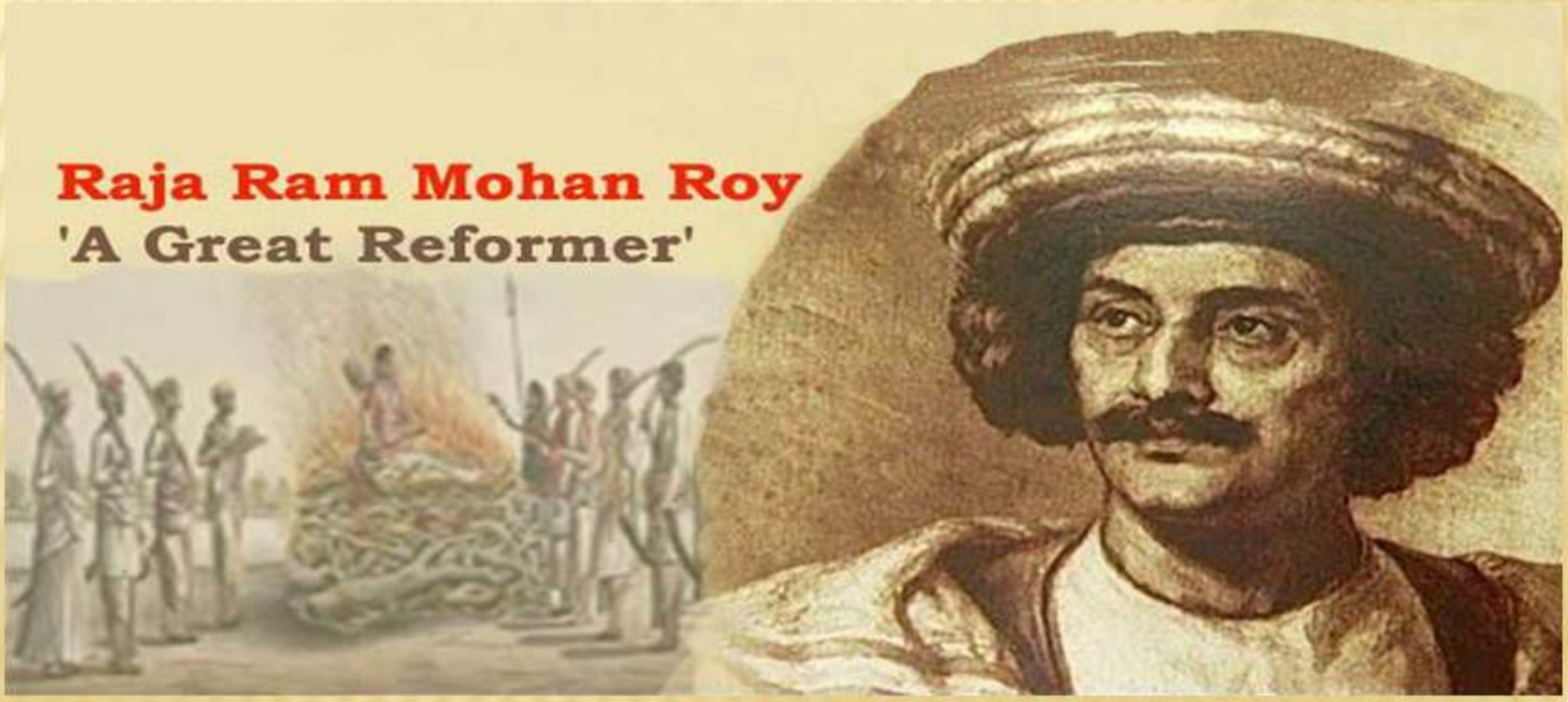

द्वितीय चरण (1885–1905)

- उदारवारी, बुद्धिजीवियों एवं उद्योगपतियों का प्रार्दुभाव
- स्वदेशी आंदोलन संगठित एवं गरम दल (सुभाषचन्द्र बोस, भगत सिंह, तिलक, अरविन्द घोस, राजपत राय, आजाद) एवं नरम दल (जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गांधी) जैसे नेतृत्व का उदय

तृतीय चरण (1905–1918)

- राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रभाव बढ़ा तथा लोगों राष्ट्रीय आत्मसम्मान जागृत हुआ
- मुसलमानों में जागरूकता पैदा हुई, अखिल भारतवर्षीय संगठन (मुस्लीम लीग, 1906) की स्थापना हुई।

चतुर्थ चरण (1918–1934)

- राष्ट्रीय आन्दोलन विस्तृत रूप में जनआधारित आंदोलन बन गया।
- अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलनों का भी प्रभाव पड़ा
- देश में समाजवादी एवं साम्यवादी समूहों का उदय हुआ।
- कई संगठनों ने मिलकर स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु आंदोलन किया।
- गांधी जी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत हुई जिसको काफी जन समर्थम मिला।

पंचम चरण (1934–1939)

- कांग्रेस समाजवादी दल का गठन
- गांधीवादी विचारधारा से पृथक होकर सुभाषचन्द्र बोस जैसे गरम दल तथा मुस्लिमलीग जैसे लोगों का प्रभाव बढ़ा एवं अनेक नये संगठन का उदय हुआ
- विद्यार्थियों, किसानों, श्रमिकों आदि में साम्यवादी दल का प्रभाव बढ़ा जिससे सामन्तवादी व जमीदारी प्रथा की समाप्ति हुई

निष्कर्ष

- देसाई की रचना 'भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि (The Social Background of Indian Nationalism) में भारतीय समाज का भौतिकवादी विश्लेषण है।
- इस बुक में भारतीय समाज को विश्लेषित करने में मार्क्सवादी उपागम कैसे प्रयुक्त किया जा सकता है।
- अंत में यह कहा जा सकता है कि भारतीय सामाजिक यर्थाथता को समझने के लिये देसाई सदैव मार्क्सवादी विचार धारा पर जोर दिया।
- देसाई ने भारतीय समाज के रूपान्तरण को समझने के लिये ऐतिहासिक आचारों को उचित माना।
- इस बुक में इन्होंने यह बताया कि किस प्रकार गुणात्मक रूपान्तरण ने भारतीय सामाजिक व्यवस्था को बदला।

THANK
YOU